Indian J. Soc.& Pol. 04(02):2017:123-126 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127(O)

सर्वोदय का गाँधीवादी एवम मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य

हिमांशु यादव[1]
[1]पी0डी0एफ.,राजनीतिशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

सर्वोदय का दर्शन धर्म ग्रन्थों के उद्गारों में भी देखने को मिलता है। वेद सभी प्राणियों के उदय की बात करता है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मा कश्चित दुःख भाग भवेत' में सर्वोदय का ही भाव छिपा है। ईशावास्योपनिषद के प्रथम श्लोक 'ईशावासमिदम सर्व यत किंचित जगत्यांजगत। तेन त्यक्तेन, भुंजीथाः मा ग्रीथः कश्चच्चिदधनम' तथा गीता के 'आत्मवत सर्वभूतेषु और सर्वभूत हितो रताः'' में सर्वोदय का ही भाव है।

KEY WORDS: सर्वोदय, गांधी, गांधीवाद, मार्क्सवाद

अपने आध्यात्म वाद, आदर्शवाद और अराजकतावाद की पृष्ठभूमि तथा सत्य और अहिंसा के प्रभाव में गांधी जी ने पश्चिमी पूंजीवादी समाजवाद का परित्याग कर दिया। 30 मार्च, 1919 ई0 को गांधी जी ने मार्क्सवाद को खारिज कर दिया और कहाः ''आधुनिक भौतिकवादी सभ्यता की परिणति बोल्शेविकवाद के रूप में हुई है। इसकी कार्यक्षमताओं में केवल उत्पादन पर बल दिया जाता है। भौतिकता ने आध्यात्मिकता को भुला दिया है। मनुष्य आत्मविहीन हो गया है।''

सर्वोदय का शाब्दिक अर्थ 'सब का उदय, ''सब प्रकार से उदय'' और ''सब तरह से उदय से लिया गया है। सबका उदय सर्वोदय का लक्ष्य है। सब प्रकार से उदय इसकी विशेषता है और सब के द्वारा उदय इसका साधन है। जब सब प्रकार से उदय की बात की जाती है तो वह धर्म की दृष्टि से की जाती है, जिसमें लौकिक और पारलौकिक उत्थान, शास्त्रीय भाषा में अभ्युदय और निःश्रेयस सिद्धि दोनों का समावेश है। अतः सर्वोदय में लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के लक्ष्यों की सिद्धि का आदर्श है। सर्वोदय में सभी जीवन के साथ–साथ सम्पन्नता की बात है। जीवन का अर्थ विकास, अभ्युदय या उन्नति है। सबका विकास हो इसके लिए सर्वोदय है।

सर्वोदय मानव जाति का साध्य एवं साधन है। रस्किन की पुस्तक 'अंटू दि लास्ट' 1904 में पोलक ने जोहान्सबर्ग से डरबन की रेल यात्रा में गांधी जी को जाने से पहले पढ़ने को दी थी। आत्मकथा मे गांधी जी ने लिखा है कि इस पुस्तक को हाथ में लेने के बाद मैं छोड़ ही न सका। इसने मुझे जकड़ लिया। ट्रेन शाम को डरबन पहुंची। सारी रात मुझे नींद नही आई इसी क्रम में आगे इस पुस्तक के बारे में कहते हैं कि पहली बात मैं जानता था, दूसरी बात धुंधली रूप में मेरे सामने थी, पर तीसरी बात का तो मैनें विचार ही नहीं किया था। अनटू दि लास्ट पुस्तक ने सूर्य के प्रकाश की भॉति गांधी जी के समक्ष यह बात स्पष्ट कर दी कि पहली बात में ही दूसरी और तीसरी बातें में समायी हुई हैं। गांधी ने 1908 में इस पुस्तक का गुजराती में अनुवाद कर सर्वोदय नामक पुस्तक लिखी।

सर्वोदय का दर्शन धर्म ग्रन्थों के उदगारों में भी देखने को मिलता है। वेद सभी प्राणियों के उदय की बात करता है। सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मां कश्चित दुःख भाग भवेत में सर्वोदय का ही भाव छिपा है। इशावास्योपनिषद के प्रथम श्लोक ईशावास्यमिदम सर्वं यत किंचित जगत्यांजगत। तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा ग्रीधः कश्चच्चिदधनम' तथा गीता के आत्मवत सर्वभूतेषु और सर्वभूत हितों रताः में सर्वोदय का ही भाव है। स्पष्ट रूप से सर्वोदय का प्रयोग सर्वप्रथम जैनाचार्य समंत भ्रद ने सर्वोदय तीर्थ के रूप में किया था। सचमुच में सर्वोदय का विचार नया नहीं लेकिन आधुनिक युग में सर्वोदय शब्द का व्यापक प्रयोग एवं सर्वोदय का कार्य गांधी जी द्वारा प्रारंभ किया गया। गांधी जी ने सर्वोदय को तीन वाक्यों मे सूत्रबद्ध करने का प्रयास किया है।

क. सबकी भलाई में अपनी भलाई है।

ख. नाई और वकील के काम का समान मूल्य है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को व्यवसाय द्वारा आजीविका चलाने का समान अधिकार है।

ग. किसान, कारीगर और मजदूर का जीवन ही सच्चा जीवन है।

गॉधी जी इन सिद्धान्तों पर अमल करते हुए कार्य करते रहें। गांधी जी का कहना है कि मैं अनटू दि लास्ट वाक्यांश के निहितार्थ का समर्थक हूँ। इस पुस्तक ने मेरे जीवन की दिशा ही बदल दी। हमें दुनिया से जो कुछ चाहिए, वह पहले, हम खुद दुनिया के दीनतम व्यक्ति को उपलब्ध कराएं। सभी व्यक्तियों को समान अवसर मिलना चाहिए। अवसर मिले तो प्रत्येक व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास की एक जैसी संभावना है। जबकि आज के संदर्भ

1:Corresponding Author

में देखें तो कुछ ही लोग सर्वस्व पर वर्चस्व का एकाधिकारी है। सर्वोदय का दर्शन समग्र जीवन के लिए निरपेक्ष और सार्वभौम होता है।

सर्वोदय की दृष्टि से जीवन विज्ञान भी है, कला भी। प्राणिमात्र के लिए समादर एवं सहानुभूति ही सर्वोदय का मार्ग है। जीवमात्र के लिए सहानुभूति का यह अमृत जब जीवन में प्रवाहित होता है, तो सर्वोदय की लता में सुरभिपूर्ण सुमन खिल उठते हैं। (5) सर्वोदय कहता है कि तुम दूसरों को जिलाने के लिए जियो। मैं तुम्हें जिलाने के लिए जीऊँ। तभी और केवल तभी सबका जीवन सम्पन्न होगा, दूसरों को अपना बनाने के लिए प्रेम का विस्तार करना पड़ता है, इसके लिए अहिंसा का विकास करना पड़ता है। सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन करना पड़ता है। सर्वोदय जीवन के शाश्वत और व्यापक मूल्यों की स्थापना चाहता है और बाधक मूल्यों का निराकरण। सर्वोदय वर्ग–विहीन, जाति–विहीन और शोषण विहीन समाज की स्थापना का ब्रह्मास्त्र है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति और समूह के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

गांधी जी को पूरा विश्वास था कि पश्चिमी समाजवाद या तो अधिनायकतंत्र के रूप में था या महज एक दर्शन के रूप में। यह भारतीयता के अनुकूल नहीं है। उन्होनें कहा, ''भारत की परिस्थितियों में समाजवाद का प्रयोग विचारणीय प्रश्न है। सिद्धान्त के रूप में हम लोग समाजवाद को जानते हैं। क्या विवादास्पद समाजवाद भारत के हालातों में उपयुक्त है, यह विचार का विषय है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जब गांधी जी के नेतृत्व में आई तो उसने गांधी जी के समाजवाद को अपने भविष्य की नीति के रूप में अपनाया। 'आत्मा पदार्थ नहीं' गांधी जी ने मार्क्स के इतिहास की भौतिकवादी या आर्थिक व्याख्या को नकार दिया। यह तो जड़ पदार्थ है। इसका आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं है। गांधी जी का पूरा विश्व दर्शन आध्यात्मवाद पर आधारित था। उन्होंने धन की अपेक्षा धर्म पर अधिक बल दिया। आत्मा के बिना शरीर अर्थहीन है। गांधी जी ने कहा, ''मैं इस विचार से सहमत नही हूँ कि भौतिकवाद को अध्यात्मवाद से जोड़ा जाए। ईश्वर की मौजूदगी को तो साबित नहीं किया जा सकता है। उसे हम देख नही सकते। वह अदृश्य, अगोचर है, किन्तु सर्वत्र विद्यमान है। इसे हम केवल आत्मानुभूति द्वारा महसूस कर सकते है। मेरे विचार में मानव जाति की प्रवृत्ति निश्चित रूप से ऊपर उठ रही है। उन्होनें मार्क्सवादी सिद्धान्त को खारिज कर दिया जो यह बताता है कि भौतिकवाद से आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में परिवर्तन हो रहे हैं। दूसरी और, ''आध्यात्मिकता से ही आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में प्रगति होती है। इतिहास की भौतिकवादी नहीं, आध्यात्मिक व्याख्या होनी चाहिए। गांधी जी ने मार्क्स के इतिहास की आर्थिक व्याख्या को एक सिरे से नकार दिया।

मार्क्स के अनुसार सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन विचारों की अपेक्षा उत्पादन विधि और वितरण से संभव है। मार्क्स के अनुसार आविष्कार या निर्माण की प्रक्रिया मानसिक नहीं शारीरिक है जो परिस्थितियों और माहौल के अनुकूल होते रहते हैं। जाति विहीन, वर्ग विहीन व शोषण से मुक्त समाज का सपना महात्मा गांधी ने देखा था और उन्होनें सर्वोदय जैसा एक दर्शन उसके लिए विकसित किया। ऐसा ही एक प्रयास पश्चिम के समाज विज्ञानी कार्ल मार्क्स ने भी किया। मार्क्स ने समाज को शोषण से मुक्त करने के लिए एक क्रांन्ति की प्रक्रिया का मत रखा। उन्होनें अपने इस मत को वैज्ञानिक समाजवाद का नाम दिया। हालांकि क्रांति की प्रक्रिया महात्मा गांधी ने भी दी, लेकिन उन्होनें स्वयं के संस्कारो के अनुरूप ही उसका स्वरूप प्रस्तुत किया। सत्य का अंश दोनों के ही दर्शन में है। समाज के लिए दोनों ही व्यवस्था को बदलना चाहते हैं, किन्तु मार्क्स ने क्रान्ति के लिए शस्त्रों की राह चुनी, जबकि गांधी जी ने क्रांति का स्वरूप अहिंसा व सत्याग्रह के अंतर्गत रखा। मार्क्स ने पूंजीवाद के खात्मे के लिए शस्त्र क्रांति का सहारा लिया।

यह विचार व्यवस्था परिवर्तन में पीड़ितों की पीड़ा का उपयोग करता है मजदूर वर्ग उसके लिए केवल क्रांति का एक हथियार मात्र है। सर्वोदय के लिए कोई विरोधी पक्ष नहीं है, वह मानव की अच्छाई को आधार मानकर आगे बढ़ता है दूसरा ध्यान देने योग्य बिंदु यह है कि सर्वोदय केवल व्यवस्था परिवर्तन के पक्ष में नहीं, वह तो व्यवस्था को ही मिटाना चाहता है। समाज में किसी भी प्रकार की व्यवस्था के वे पक्ष में ही नहीं, जबकि मार्क्स केवल व्यवस्था का स्थानान्तरण करना चाहते हैं, सत्ता को पूंजीपतियों के हाथ से निकालकर मजदूरों के हाथ में सौंपना ही उनका मुख्य उद्देश्य है। ऐसा करने से समाज में व्याप्त शोषण समाप्त हो जायेगा यह अनिश्चित है। आवश्यक नहीं कि सत्ता प्राप्ति के बाद मजदूर वर्ग अन्यो का शोषण नहीं करेगा। प्रसिद्ध गांधीवाद व सर्वोदयी विचारक दादा धर्माधिकारी के अनुसार, ''समाजवादी क्रांति के बाद साहूकारी व शोषण की समाप्ति नहीं होगी, केवल एक व्यक्ति की साहूकारी के स्थान पर एक वर्ग की साहूकारी स्थापित हो जायेगी। ऐसे समाज का सपना सर्वोदय का नहीं।

''गांधी जी आध्यात्मिक समाजवाद के प्रतिपादक थे, इसलिए उन्होनें इतिहास की आध्यात्मिक व्याख्या की है। यह उतना ही पुराना है जितना पुराना व्यक्ति की चेतना में धर्म का उदय। उन्होनें केवल वाह्य कार्य–कलापों या भौतिकवाद को सभ्यता संस्कृति का वाहक नहीं माना।

उन्होनें गहन आंतरिक विकास पर बल दिया। उन्होने कांग्रेस में बराबर इसके नैतिक पक्ष का समर्थन किया तथा इसे आत्म शोधक संस्था माना न कि याचक संस्था। गांधी जी के अनुसार मानव जाति का इतिहास

बराबर अहिंसा की ओर बढ़ रहा है उनका विश्वास था कि मानव जाति की ऊर्जा मानव को ऊपर उठा रही है यह सत्य, अहिंसा और प्रेम का परिणाम है। अतः उनका निष्कर्ष था कि मानव समाज अध्यात्मवाद से प्रभावित है। वर्ग–संघर्ष नहीं, वर्ग सहयोग। गांधी जी ने मार्क्स के वर्ग–संघर्ष सिद्धान्त को भी खारिज किया। उनका कहना था कि इतिहास वर्ग–संघर्ष की जगह वर्ग सहयोग का अभिलेख है। मार्क्स ने आवश्यक रूप से पूंजीवादी और मजदूरों के बीच तल्खी पैदा किया है। पूंजी और श्रम के सहयोग से ही उत्पादन होता है संघर्ष से तो उत्पादन ही ठप पड़ जाएगा। गांधी जी संघर्ष को बढ़ाने की अपेक्षा घटाना चाहते थे तथा दोनों मे सहयोग की भावना पैदा करना चाहते थे। गांधी जी के शब्दों में, ''वर्ग–संघर्ष का विचार मुझे अच्छा नही लगता। यदि हम अहिंसा का अर्थ समझते हैं तो वर्ग–संघर्ष की जगह वर्ग सहयोग की बात करें। जो वर्ग संघर्ष को अवश्यंभावी समझते हैं, वे अहिंसा का अर्थ नहीं समझते।'' गांधी जी का कथन था कि पूंजी और श्रम एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं।

दोनों का एक दूसरे से गहरा सम्बन्ध है। उन्होनें कहा, ''श्रमिक का कौशल उसकी पूंजी है। पूंजीपति अपनी पूंजी में श्रमिको के सहयोग के बिना वृद्धि नहीं कर सकते, इसी तरह श्रमिक अपने हुनर या कौशल का उपयोग पूंजीपति के सहयोग के बिना नहीं कर सकता। इसमें कोई संदेह नहीं कि वस्तुओं के उत्पादन में दोनों का सहयोग और सहभागिता अवश्यम्भावी है। उत्पादन में दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं सर्वोदय न कि सर्वहारा वर्ग का अधिनायक तंत्र। मार्क्स के लिए सर्वहारा वर्ग का अधिनायकतंत्र आवश्यक था। इसके बिना समतावादी समाज की स्थापना नहीं की जा सकती, गांधी जी को यह पसंद न था। उन्होनें इसे सिरे से नकार दिया। उन्होंने कहा, ''मैं न तो प्रबुद्ध अधिनायकतंत्र और न ही किसी प्रकार के अधिनायकतंत्र में विश्वास करता हूँ। इससे न तो अमीरी दूर होगी और न गरीबी दूर होगी।'' साथ ही इसकी कोई गारन्टी नही कि अधिनायकतंत्र, निरंकुशतंत्र साम्राज्यवादी या कुचक्री बन जाय। रूस में जब जारशाही का जमाना था तो वहॉ पूंजीपतियों, कुलीनों और जार के बीच कुचक्र का दौर बना रहता था। लेकिन जब साम्यवाद आया तो मजदूरों का अधिनायकतंत्र कायम हुआ। गांधीजी के अनुसार अधिनायकतंत्र बराबर हिंसा को जन्म देता है। इससे हिंसा प्रतिहिंसा का दौर बना रहता है।

उन्होनें इसे बिल्कुल नकार दिया, क्योंकि यह मानव जाति को तथा व्यक्तित्व को नष्ट करके बड़ी हानि पहुँचाता है।

गांधी जी का समाजवाद नैतिकता, हिन्दुत्व, ग्राम्य, मानवतावादी और प्रजातंत्र पर खड़ा था। गांधी जी एक नैतिक समाजवादी थे, इसीलिए उनका समाजवाद नैतिकता, आध्यात्मवाद और सत्य धर्म पर खड़ा था। इसे राजनीतिक संरक्षण प्राप्त कर कत्ल या रक्तपात से स्थापित नहीं किया जा सकता। यह व्यक्ति के भौतिक उद्धार से संभव है। हरिजन में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए उन्होनें लिखा था, ''समाजवाद एक व्यक्ति से शुरू होता है, धीरे–धीरे इसके अनुयायियों की संख्या बढ़ती जाती है। यदि कोई समाजवादी बनना नहीं चाहता तो व्यक्तियों को लाख समझाने–बुझाने पर भी कोई लाभ नहीं।'' गांधी जी के अनुसार, सच्चा समाजवाद, अनुग्रह, सद्भावना और प्रेम पर आधारित होता है। भारत में सच्चा समाजवाद इशोपनिषद के प्रथम श्लोक में मिलता है। वैज्ञानिक समाजवाद के जन्म पर टिप्पणी करते हुए उन्होनें कहा, ''समाजवाद पूंजीवादी द्वारा पूंजी के दुरूपयोग से शुरू नहीं हुआ, जैसा कि मैनें कहा कि समाजवाद यहां तक कि साम्यवाद भी इशोपनिषद् के प्रथम श्लोक में स्पष्ट है। जो सत्य है वह यह है कि जब कुछ सुधारकों ने समाजवाद में विश्वास खो दिया, तो वैज्ञानिक समाजवाद की तकनीक का जन्म हुआ। मैं वैज्ञानिक समाजवादियों की समस्या के समाधान में लगा हूँ। फिर भी यह सत्य है कि मेरा समाजवाद अहिंसात्मक है। गांधी जी ने पश्चिमी समाजवाद और अपने समाजवाद में कही मेल नहीं देखा। गांधी जी ने कहा, पश्चिमी समाजवाद और साम्यवाद कुछ सिद्धान्तों पर आश्रित हैं, जो सिद्धान्तों से बिल्कुल भिन्न हैं। उनकी एक धारणा तो यह है कि मनुष्य बड़ा स्वार्थी होता है आत्मा की आवाज सुन सकता है, पशु ऐसा नहीं करता, मनुष्य कभी भी पशु की तरह हिंसक नही हो सकता। स्वार्थ और हिंसा पशुओं के गुण है।

दोनों का लक्ष्य एक है, किन्तु लक्ष्य प्राप्त करने के तरीके में मूलभूत अन्तर है। सर्वोदय दर्शन की आधारशिला अपने देश की संस्कृति के साथ गहरी जुड़ी हुई है। यही कारण है कि सर्वोदय ने समाज परिवर्तन के लिए अपनी प्राचीन परम्परा के अनुरूप अहिंसा की प्रक्रिया को चुना। यहॉ एक विशेष ध्यान रखने योग्य बिन्दु यह है कि कार्ल मार्क्स का दर्शन व्यवस्था का परिवर्तन करने पर टिका है, वहीं सर्वोदय का व्यक्ति परिवर्तन पर। महात्मा गांधी ने यह स्पष्ट रूप से स्वीकारा कि जब तक व्यक्ति में आध्यात्मिक व सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं आता, तब तक समाज में परिवर्तन कत्तई नहीं होगा। केवल व्यवस्था परिवर्तन से समाज में व्याप्त असमानता का निराकरण नहीं हो सकता। उन्होनें वर्तमान में प्रचलित तीनों प्रकार की सत्ताओं से सर्वोदय को भिन्न माना। उन्होनें समाज को एक ऐसी स्थिति तक ले जाने की बात कहीं, जहॉ आध्यात्मिक सत्ता सर्वोच्च हो जहॉ धन, बल व शक्ति पर आधारित व्यवस्था से कहीं ज्यादा प्रभावी स्थान नैतिकता व कर्तव्य का हो।

सर्वोदय केवल अनुशासन की सत्ता का पक्षधर है। जब समाज प्रकृति के नियमों को कर्तव्य मानकर उनका पालन करेगा।, तब किसी भी प्रकार की सत्ता की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी। व्यक्ति का यह अनुशासन ही सम्पूर्ण समाज की ताकत बनेगी। यह

विचार अपने देश की प्राचीन परम्परा के बिल्कुल निकट है। अपने यहॉ मान्यता है कि संसार रीत के नियमों से चलता है। ये रीति ही आदिकाल से संसार का संचालन कर रहा है। इसी को सर्वोदय दर्शन में आत्मानुशासन कहा गया। सर्वोदय ने इस प्राचीन सिद्वान्त की नवीन व्याख्या की है। आत्मानुशासन समाज को ऐसी दिशा में ले जायेगा, जहॉ पर नियंत्रण के स्थान पर संयम की प्रधानता होगी। किसी भी व्यक्ति पर किसी प्रकार की बाध्यता नहीं होगी, फिर भी नियमों का पालन होगा। उस स्थिति मे पहुँचकर समाज में अधिकारों के स्थान पर कर्तव्यो को ज्यादा मान्यता दी जायेगी। व्यक्ति मे समाज के प्रति कर्तव्य–पालन की भावना होगी, क्योंकि व्यक्ति किसी शासन के द्वारा नियमित होने के स्थान पर स्वानुशासन द्वारा प्रेरित होगा। इसी को उन्होनें राजनीति का विकल्प लोकनीति का नाम दिया।

तीसरा ध्यान देने योग्य बिन्दु है कि मार्क्स की भॉति सर्वोदय सीधे शासन को समाप्त करने के बजाय समाज के आध्यात्म व अनुशासन का दायरा बढ़ाने पर बल देता है। उनकी स्पष्ट मान्यता है कि अनुशासन की बढ़ोत्तरी शासन को अव्यवहारिक कर देगी और धीरे–धीरे शासन–व्यवस्था स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। साथ ही इस प्रक्रिया को प्रारम्भ करने का दायित्व भी वह राज्य पर ही डालते हैं। सर्वोदय दर्शन के अनुसार ''राज्य धीरे–धीरे ऐसी स्थिति उत्पन्न करें कि समाज को राज्य व्यवस्था की आवश्यकता ही न रहें वह अव्यवहारिक हो जाये। ''यानी मार्क्स की भॉति वह राज्य को आवश्यक बुराई नहीं मानते। हां, अहिंसक क्रांति की पूर्णता की एक आवश्यक कड़ी आवश्यक मानते हैं। इसका उपर उल्लेख हुआ है। कुछ अर्थों में यह राज्य के होने का कारण भी है। यानी समाज को यदि ऐसी उच्चतम स्थिति पर ले जाना है तो राज्य का होना भी परिहार्य है।

सर्वोदय दर्शन मार्क्स की तरह मतभेद की बजाय मनभेद को सहारा मानकर नही चलता है। वह किसी भी प्रकार की व्यवस्था के प्रति रंचमात्र भी दुर्भावना नहीं रखता। इसलिए वह संघर्ष को अनिवार्य नहीं मानता हैं किन्तु मार्क्स, एक वर्ग के साथ घोर दुर्भावना रखता है। अतः उसकी समाप्ति के लिए संघर्ष को भी अनिवार्य मानते हैं और उस संघर्ष के परिणामस्वरूप स्थापित नवीन व्यवस्था को वे द्वन्दात्मक भौतिकवाद पर स्थापित गरीबों का लोकतंत्र कहते हैं। चूंकि संघर्ष भौतिक है तो स्थापित होने वाली व्यवस्था भी भौतिक ही होगी। फिर उसकी उन्नति का आधार भी भौतिक ही होगा। यहॉ पर सर्वोदय का मार्क्सवादी व्यवस्था के साथ एक और विरोध दिखाई देता है। सर्वोदय समाज की उन्नति का आधार आध्यात्म को मानता है, क्येांकि वह शाश्वत परिवर्तन की गवाही देता है। ऐसे परिवर्तन की नहीं, जिसका कुछ समय के उपरांत पुनः शुद्धिकरण करने की आवश्यकता पड़े। समाज केवल भौतिक उन्नति पर ही आश्रित हो जायेगा, तो पुनः स्वार्थ व द्वेष का बोलबाला हो जायेगा। फिर वहीं स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। इसलिए वह लोक को आध्यात्मिक उन्नति के लिए भूमि प्रदान करने का काम हाथ में लेता है, ताकि समाज मे किसी भी प्रकार की व्यवस्था व नीति के स्थान पर लोकनीति की प्रतिस्थापना हो जाये। यही सम्पूर्ण प्रक्रिया ही अहिंसक क्रांति की प्रक्रिया कहलायेगी व इस पर आधारित राज्य रामराज्य होगा और उसकी नीति होगी लोकनीति। ऐसे समाज मे प्रत्येक व्यक्ति श्रम को समाज के प्रति अपना कर्तव्य मानेगा व प्रत्येक का सुख–दुख समाज का सुख–दुख होगा।

सर्वोदय दर्शन ही वर्तमान मे समाज की उन्नति का एक मात्र सही हल है, ऐसा गांधी जी ने माना और सही भी है। विद्वान जिस मार्क्सवाद विचारधारा की तुलना सर्वोदय (गांधीवाद) के साथ करते हैं, उस मार्क्सवाद की सर्वश्रेष्ठ कर्मभूमि रूस में व उन देशों में जहॉ इस विचारधारा ने अपने पॉव पसारे, वर्गों के परस्पर विरोध को उभार कर क्रांति के नाम पर रक्त की होली खेली। आज सभी यह स्वीकार करते हैं कि उनकी सबसे बड़ी समस्या सांस्कृतिक है। वे समाज को भौतिक उन्नति के शिखर पर तो ले गये, किन्तु उनका नैतिक स्तर ऊॅचा उठाने मे वे सर्वथा अक्षम रहे। इसलिए वे देश घोर विसंगतियों से जूझ रहे है।

संदर्भ

यंग इण्डिया, 3 सितम्बर, 1925

Comprehensive site by gandhian institute, Bombay Sarvoday Mandal and Gandhi online books http/www/mkgandhi.org/cwmg.htm

ब्रह्मानंद (2009). महात्मा गांधी एण्ड वर्ल्ड पीस, *उडीसा रिव्यू*

सिंह, रामजी (1988) *गांधी एण्ड दी माडर्न वर्ल्ड* नई दिल्ली, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी

फिशर, लुई, महात्मा गांधी (1964) *हिज लाइफ एंड मैसेज फॉर दि वर्ल्ड,* बंबई, भारतीय विद्या भवन,पृ088

हरिजन, 4 अगस्त, 1946 ई0

प्रभु, आर0के0, एण्ड यू0आर0राव(1945) : *दी माइण्ड ऑफ महात्मा गांधी,* लंदन, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,

शुक्ला, सी.एस.(1960) गांधीजी विरू ऑफ लाइफ, बंबई,भारतीय विद्या भवन,पृष्ठ 118

गांधी एम.के.(1962) *इण्डिया ऑफ माई ड्रीम्स* अहमदाबाद,नवजीवन,पृ034